



World Translation

World Translation

Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

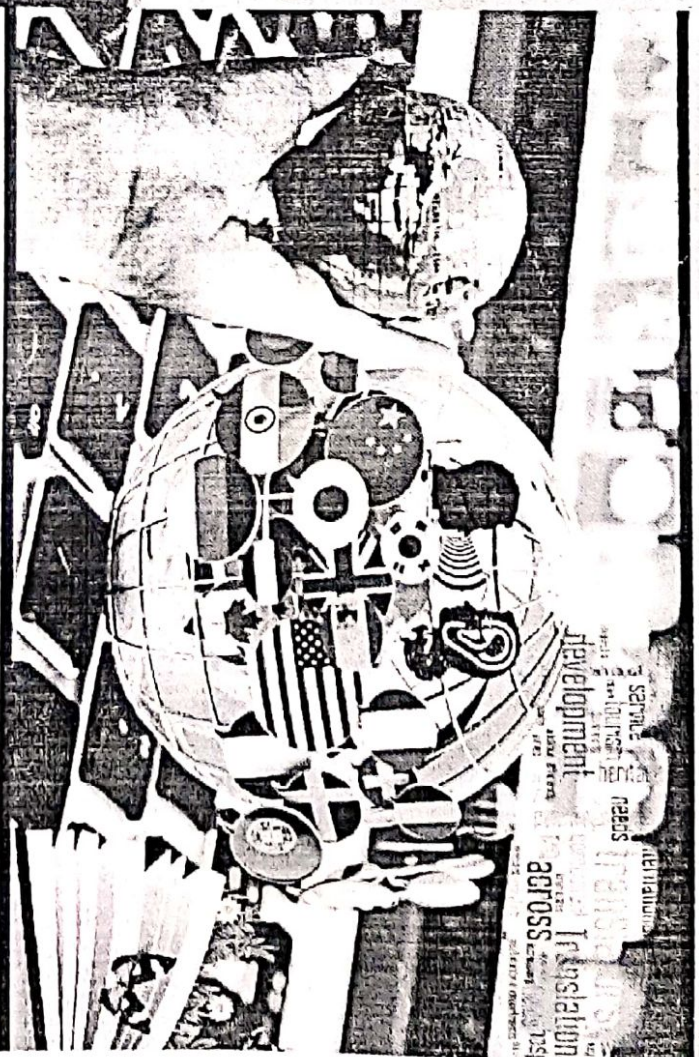
Editor
Dr. Vikash Kumar

World Translation
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol-09, Issue-7, January-June 2019

ISSN No : 2278-0408

World Translation
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal



Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

Editor
Dr. Surendra Pandey

Editor
Dr. Vikash Kumar

ISSN: 2278-0408

Vol.-9 /Issue-7
January- June 2019

World Translation

(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal)

वर्ल्ड ट्रांसलेशन
अन्तर्राष्ट्रीय सान्दर्भिक शोध-पत्रिका

प्रधान सम्पादक
प्रो० अशोक सिंह

सम्पादक
डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय
डॉ० विकास कुमार

Address
C-2, Satendra Kumar Gupta Nagar
Lanka, Varanasi-221005 U.P. (INDIA)
Email-worldtranslation04@gmail.com

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी आत्मकथाओं की भाषा

डॉ० हिमांशु कुमार*

मनुष्य अपने विचारों को भाषा के माध्यम से ही प्रकट करता है। उसके चिंतन, मनन एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति भाषा द्वारा ही सम्भव है। प्रत्येक लेखक की भाषा उसके व्यक्तित्व से ही सम्बद्ध होती है। भाषा और शैली के सम्बन्ध से भाषायी परिदृश्य निर्मित होता है।

साहित्यकार समाज से अपने को पृथक् नहीं रख सकता है। उसकी भाषा में तत्कालीन समाज की विशिष्टताएँ प्रतिभासित होती हैं। भाषा भावाभिव्यक्ति का माध्यम है और उस माध्यम के प्रयोग की रीति या विधि या शैली है। काल के प्रवाह के साथ लेखक भाषा को नया आयाम प्रदान करता है जिससे उसमें नयी अर्थग्राह्यता समाविष्ट हो जाती है परन्तु यह साधारण साहित्यकार के बस की बात नहीं। भाषा की गरिमा साहित्यकार के विशिष्ट व्यक्तित्व पर आधारित होती है। प्रायः अनेक लेखक अपनी भाषा के ही द्वारा, लोगों द्वारा पहचान लिए जाते हैं, क्योंकि उनकी भाषा में उनकी विशिष्ट शैली झाँकती हुई सी प्रतीत होती है। वस्तुतः शैली को भाषा से पृथक् नहीं स्वीकार किया जा सकता। दोनों का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। जो व्यक्ति जिस प्रकार की भाषा लिखता है, उसका व्यक्तित्व, उसकी प्रवृत्तियाँ तथा उसका व्यवहार एवं क्रिया-कलाप ठीक वैसा ही हो जाता है।

साहित्य-सृजनकर्ता के लिए चिरन्तन सत्यों को उद्भूत करना भी एक कार्य है। उसे सत्य से कटा नहीं रहना चाहिए। वह भाषा एवं उत्कृष्ट शैली के ही माध्यम से सत्य, शिव, सुंदरम् की कुशल अभिव्यक्ति करता है। भाषा में उसके वाह्य तत्त्व अर्थात् प्रसाद, ओज, माधुर्यादिगुण, अलंकार, शब्द चयन आदि की निश्चय ही महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

भाषा की कसावट साहित्य सृजन का अनिवार्य अंग है। भाषा, साहित्य के युगीन सन्दर्भ को भी व्यक्त करती है। साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा आत्मकथा विधा की भाषा विशिष्ट होती है। क्योंकि आत्मकथा में लेखक और नायक एक ही व्यक्ति होता है। आत्मकथा की रचना विषयवस्तु की दृष्टि से अन्य साहित्यिक विधाओं से अलग होती है। आत्मकथा में रचनाकार एक सीमा के बाद स्वतन्त्र होकर उसके स्वरूप को निर्मित कर सकता है। वस्तुतः किसी भी कृति का स्वरूप उसके बाहर के सामाजिक यथार्थ और भीतर के यथार्थ के अंतर्सम्बन्ध से निर्धारित होता है। चूँकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन की कहानी लिखता है, अतः आत्मकथा में भाषा की कई शैलियाँ बन जाती हैं। कहना न होगा कि आत्मकथा की रचना प्रक्रिया के तत्त्व, अन्य साहित्यिक विधाओं के समान होते हुए भी अपनी प्रस्तुति में भिन्न होते हैं। आत्मकथा में लेखक कभी भावात्मक शैली अपनाता है, कभी वर्णनात्मक शैली, कभी विचारात्मक या दार्शनिक शैली, कभी व्यंग्यात्मक शैली और कभी अहंवादी शैली। लेखक इन शैलियों के माध्यम से अपने भाषायी मन्तव्य को प्रकट करता है। उसकी भाषा शैली में जीवन की वास्तविकता के चित्रण के अनुसार कई भाषाओं के शब्द आ सकते हैं। लोक जीवन के शब्द, सभ्य समाज के शब्द, अन्य विदेशी भाषाओं के शब्द आदि का आत्मकथा में प्रयोग होता है। कहा जाता है कि भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए। आत्मकथा में पात्रानुकूलता के गुण का पालन करने में कई भाषाओं के

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003